International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

स्ववित्तपोषित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

अखिलेश कुमार मौर्य[1], डॉ0 अरूण कुमार मिश्रा[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज

[2]सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज

Article Info
Volume 8, Issue 3
Page Number : 966-973

Publication Issue
May-June-2021

Article History
Accepted : 18 June 2021
Published : 25 June 2021

मूल्य का सम्बन्ध हमारी प्राथमिकताओं से है। उदाहरणार्थ, कोई व्यक्ति इस दुनिया में शक्ति, धन और नाम को मूल्य प्रदान करता है किन्तु इन तीनों में से सबसे पहले वह किसको प्रधानता देता है इसका निर्णय वह इन तीनों की तुलनात्मक मूल्य को ध्यान में रखकर करेगा और ऐसा करने में प्रत्येक का क्रमिक मूल्य या क्रमिक स्थान देगा। मान लीजिए वह 'धन' को प्रथम प्रधानता देता है, 'शक्ति' को दूसरे नम्बर पर रखता है और 'नाम' को तीसरा स्थान देता है तो स्पष्ट है कि वह मूल्य—निर्धारण करने के पश्चात ही ऐसा निश्चय कर पाया है। वह व्यक्ति पहले नम्बर पर धन प्राप्त करना चाहेगा, दूसरे पर शक्ति और शक्ति के पश्चात् नाम की इच्छा करेगा।

दूसरे, विभिन्न विकल्पों के मध्य जब हम प्राथमिकताओं के आधार पर उनका मूल्य निर्धारण करते हैं तो उनमें से प्रत्येक विकल्प की प्राप्ति या उपलब्धता की पूर्ण सम्भावना मूल्यकर्ता को रहती है। अर्थात् मूल्य निर्धारण में हमारे सामने स्पष्ट विकल्प होते हैं जिनमें से हमें चयन करना होता है। दूसरे शब्दों में वे विकल्प हमारे सामने मौजूद होते हैं या स्पष्ट दिखाई देते हैं।

दूसरी धारणाओं की तरह मूल्य शब्द के भी अनेक अर्थ निकलते हैं। मूल्यों की धारणा और अर्थ में संदर्भ तथा विषय/अनुशासन के अनुसार बदलाव आ जाता है। मसलन गणित में 'मूल्य' का अर्थ किसी बीजगणितीय पद या किसी समीकरण के एक चर या खुद व्यंजक का परिणामात्मक मान होता है। भौतिकी में पदार्थ का मूल्य उसकी अन्तः वस्तु को किसी पारम्परिक पैमाने पर किया जाने वाला परिमाणात्मक या संख्यात्मक माप है। अर्थशास्त्र में बाजार में दूसरे वस्तुओं/सेवाओं के सापेक्ष किसी वस्तु की अपनी महत्ता या क्रय शक्ति को उसका मूल्य कहते हैं। इसी प्रकार किसी समय विशेष में किसी वस्तु विशेष के बदले जितनी मुद्रा या जितनी अन्य वस्तुएं/सेवाएं प्राप्त हो सकती है, उन्हें उसका मूल्य कहा जा सकता है। रोजमर्रा की बातचीत में मूल्य से तात्पर्य यह है कि कोई व्यक्ति मनोगत स्तर पर किसी इच्छे विचार या सिद्धान्त को कितना महत्व प्रदान करता है। इस तरह मूल्य का सम्बन्ध जीवन के लिए मूल्यवान महत्वपूर्ण या शुभ समझी जाने वाली बातों के बारे में व्यक्ति के सिद्धान्तों या मानदंडों से होता है। मूल्य आमतौर पर कर्म की दृष्टि से चयन के मानदंड होते हैं। वे कमोवेश स्पष्ट ढंग से यह बताते हैं कि कुछ विशेष परिस्थितियों में हमें क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए। मूल्य

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वांछित होने के मानदंड होते हैं जो विशिष्ट स्थितियों से लगभग स्वतंत्र होते हैं। मूल्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं, जैसे– सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य और आर्थिक मूल्य आदि।

प्रत्येक मानव के जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते हैं, जो समय की गति के साथ–साथ बदलते जाते हैं। इन्हीं अनुभवों से कुछ सामान्य सिद्धान्त जन्म लेते हैं, जो कि मानव के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। ऐसे सिद्धान्त जो समस्त जीवन को एक दर्शन के रूप में परिवर्तित कर देते हैं तथा जीवन जीने की एक विशिष्ट कला को जन्म देते हैं। वे अनुभव व्यक्ति के पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं ''मूल्य'' अथवा ''वेल्यूज'' के नाम से जाने जाते हैं। व्यक्ति के मूल्य इस बात के दर्पण होते हैं कि वे अपनी सीमित शक्ति व समय में क्या करना चाहते हैं। जीवन के पथ–प्रदर्शक के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ–साथ और अधिक परिपक्व होते जाते हैं।

सामान्य रूप से मूल्यों का प्रयोग व्यक्ति कीरूचियों, प्रेरणाओं एवं अभिवृत्ति के मापन हेतु किया जाता है अर्थात् मूल्य व्यक्ति की रूचियों, अभिवृत्तियों प्रेरणाओं की ओर इंगित करते हैं। मूल्यों की व्याख्या एवं विवेचना अलग–अलग विद्वानों के द्वारा अलग–अलग तरह से की गई है। ब्राइट मैन (1958) के अनुसार मूल्य से हमारा आशय किसी पसन्द, पुरस्कार, वांछित पहुँच या आनन्द से है। किसी क्रिया या वांछित वस्तु का वास्तविक अनुभवों पर आनन्द प्राप्त करना ही मूल्य समझा जाता है अर्थात मूल्य में समस्त सुखदायी भावनाएँ निहित होती है। किसी भी परिस्थिति या विशिष्ट समय में मूल्य द्वारा व्यक्ति को आनन्द की अनुभूति होती है। बी0एस0 सन्यास (1962) ने समस्त दार्शनिक परिभाषाओं के अध्ययन के पश्चात् यह बताया कि मूल्य आंशिक रूप से भाव या तर्क से सम्बन्धित होते हैं तथा मूल्य जैसे प्रत्यय की परिभाषा करना अत्यन्त ही कठिन कार्य है। मूल्यों की दार्शनिक परिभाषा इसे भावना, संवेग रूचियों एवं अरूचियों के सन्दर्भ में स्वीकार करती है।

मूल्यों के मनोवैज्ञानिक स्वरूप की व्याख्या करते हुए मर्फी, मर्फी एवं न्यूकौम्य (1937) का मत है कि ''मूल्य सामान्य रूप से किसी उद्देश्य की प्राप्ति का एक विन्यास है।'' आल्पोर्ट (1951) के मतानुसार, 'मूल्य वह क्रिया है जो किसी उद्दीपक से उद्दीप्त होती है।' कलकहोन (1961) के शब्दों में 'मूल्य इच्छाओं के वे प्रत्यय हैं जो चयनात्मक व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।' यह एक विशेष प्रकार की अभिवृत्तियाँ भी होती हैं जो प्रतिमानों के रूप में कार्य करती हैं तथा जिनके द्वारा निर्णयों का मूल्यांकन होता है। अतएव विद्वानों की दृष्टि में मूल्य भावनाओं, विन्यासों क्रियाओं या अभिवृत्ति की उत्पत्ति है।

व्यक्तित्व के निर्माण में मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य पक्षों के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के मूल्यों का संगठन होता है। प्रताप एवं श्रीवास्तव (1982) ने मूल्यों को व्यक्तित्व निर्माण के संगठन में महत्वपूर्ण माना है। रेसूचर (1969) ने मूल्यों को योग्यताओं, व्यवहार व किसी विशिष्ट उद्देश्यों के प्रति समर्पित होना माना है। कोई भी कार्य जो किसी व्यक्ति की इच्छा पूर्ति करता है, सामान्य रूप से मूल्य के रूप में माना जाता है। वह व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों, रूचियों एवं अभिव्यक्तियों को इंगित करता है। स्प्रेन्जर (1928) ने मूल्यों को एक व्यक्ति की अंतनिर्हित प्रेरणाओं एवं रूचियों के रूप में परिभाषित किया है। कलम होम (1981) के शब्दों में ''मूल्य इच्छाओं के वे प्रत्यय हैं, जो चयनात्मक व्यवहार के लिए आवश्यक होते हैं''। ये एक प्रकार की अभिवृत्तियाँ भी होती हैं जो प्रतिमानों के रूप में कार्य करती हैं तथा जिनके द्वारा निर्णयों का मूल्यांकन होता है।

मूल्य व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ये वे इच्छायें होती हैं जो कि एक समाज के द्वारा स्वीकृत होती हैं। मूल्य वह मापित स्तर है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छाओं से प्रभावित होकर उपलब्ध विकल्पों में से किसी एक का चयन करता है।

शोध समस्या का कथनः प्रस्तावित शोध समस्या का कथन इस प्रकार है–

"स्ववित्तपोषित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध अध्ययन के उद्देश्यः प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास किया जायेगा।

1. सह शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्य की वर्तमान स्थिति के स्तर का पता लगाना।
2. महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्य की वर्तमान स्थिति के स्तर का पता लगाना।
3. सह शिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएंः उपरोक्त शोध उद्देश्य की प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण एवं परीक्षण किया जायेगा।

1. सह शिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्य करने वाली शिक्षिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

शोध परिसीमनः शोध अध्ययन की परिसीमाएं निम्नलिखित हैं–

1. शोध अध्ययन की भौगोलिक परिसीमा प्रयागराज शैक्षिक मण्डल होगी।
2. प्रयागराज शैक्षिक मण्डल के स्ववित्तपोषित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों तक शोध सीमित होगा।
3. शोध अध्ययन केवल माध्यमिक विद्यालयों के कार्यरत अध्यापिकाओं तक सीमित होगा।
4. शोध अध्ययन केवल एक चर यथा व्यक्तिगत मूल्यों तक सीमित होगा।

शोध विधिः प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध जनसंख्याः प्रयागराज शैक्षिक मण्डल में आने वाले समस्त स्ववित्तपोषित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाऐं प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या का निर्माण करेंगी।

न्यादर्शः शोध अध्ययन में 450 महिला शिक्षिकाओं को न्यादर्श के रूप में शोध जनसंख्या से चुना गया है।

न्यादर्श चयन की विधिः सरल यादृश्चिक विधि से प्रतिदर्श की समस्त इकाईयों का चयन किया गया है।

शोध उपकरणः शोध चरों के मापन के लिये निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग प्रस्तावित किया जाता है।

व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावलीः व्यक्तिगत मूल्य के मापन के लिए डॉ0 (श्रीमती) जी0पी0 शैरी एवं स्व0 प्रो0 आर0पी0 वर्मा द्वारा निर्मित च्मतेवदंस टंसनमे फनमेजपवददंपतम नामक प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

शोध सांख्यिकीः शोध आंकड़ों के विश्लेषण के लिए विशेषज्ञों की राय से उपयुक्त वर्णनात्मक एवं निष्कर्षात्मक शोध सांख्यिकी का प्रयोग किया है। साथ ही साथ शोधार्थी द्वारा आंकड़ों में विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं अर्थापन

सारिणी–1: सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों तथा बालिका शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना

क्रम सं0	व्यक्तित्व मूल्य आयाम का नाम	समूह का नाम	संख्या (छ)	मध्यमान प्राप्तांक व्यक्तिगत मूल्य	मानक विचलन मान	क्रान्तिक अनुपात मान (ज)	सार्थकता स्तर
1.	धार्मिक मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	12.23	2.79	0.949	छै
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	12.64	2.54		
2.	सामाजिक मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	14.31	2.83	3.527	″
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	12.68	2.82		
3.	लोकतांत्रिक मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	14.33	2.38	2.969	″
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	13.11	2.67		
4.	सौन्दर्य मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	12.19	2.79	2.534	′
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	10.97	3.06		
5.	आर्थिक मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	10.83	2.95	2.998	″
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	12.15	2.42		
6.	ज्ञानात्मक मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	14.28	2.40	5.440	″
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	11.81	3.11		
7.	सुखात्मक मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	9.71	2.97	4.789	″
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	12.00	2.89		
8.	शक्ति मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	9.24	2.74	2.673	″
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	10.41	2.63		
9.	परिवार प्रतिष्ठा मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	11.49	2.88	2.863	″
		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	12.96	3.37		
10.	स्वास्थ्य मूल्य	सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालय	75	11.40	2.98	0.273	छै

		बालिका माध्यमिक विद्यालय	75	11.28	2.99		

' 0.05 पर सार्थक, '' 0.01 पर सार्थक, छे सार्थक नहीं है।

अर्थापन– सारिणी संख्या 1 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों तथा बालिका शिक्षा संस्थानों में शिक्षण कार्य करने वाली शिक्षिकाओं के व्यक्तिगत मूल्यों (धार्मिक, सामाजिक, लोकतांत्रिक, सौन्दर्य, आर्थिक, ज्ञानात्मक, सुख, शक्ति, परिवार तथा स्वास्थ्य) की तुलना अलग–अलग क्रान्तिक अनुपात मान (टी–मूल्य) के पद में की गई है। सारिणी 1 की क्रम संख्या 1 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के धार्मिक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के धार्मिक मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के धार्मिक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 0.949 है जो विश्वास के 0.05 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक नहीं है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.05 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 1.96 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 0.949 न्यूनतम सार्थक टी–मान से कम है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। यद्यपि सहशिक्षा विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का धार्मिक मूल्य प्राप्तांक बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं के मूल्य प्राप्तांक से कम है, फिर भी इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि सहशिक्षा संस्थाओं की शिक्षिकाएं बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं से कम महत्व धार्मिक मूल्य को देती है क्योंकि दोनों समूहों के प्राप्तांकों में अन्तर वास्तविक न होकर आभासी है तथा इसका कारण मापन सम्बन्धी त्रुटि हो सकती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 2 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 3.527 है जो विश्वास के 0.01 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.01 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 2.58 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 3.527 न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। चूँकि सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का सामाजिक मूल्य प्राप्तांक बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं के मूल्य प्राप्तांक से अधिक है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सहशिक्षा संस्थाओं की शिक्षिकाएं बालिका शिक्षा संस्थानों की शिक्षिकाओं से अधिक महत्व सामाजिक मूल्य को देती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 3 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के लोकतांत्रिक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के लोकतांत्रिक मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के लोकतांत्रिक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 2.969 है जो विश्वास के 0.01 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.01 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–2.58 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 2. 969 न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के लोकतांत्रिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। चूँकि सहशिक्षा विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का लोकतांत्रिक मूल्य प्राप्तांक बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं के लोकतन्त्रात्मक मूल्य प्राप्तांक से अधिक है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सहशिक्षा माध्यमिक संस्थाओं की शिक्षिकाएं बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक महत्व लोकतांत्रिक मूल्य को देती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 4 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के सौन्दर्य मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के सौन्दर्य मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के सौन्दर्य मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 2.534 है जो विश्वास के 0.05 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.05 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 1.96 होना चाहिए। प्राप्त

टी–मान 2.534 न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के सौन्दर्य मूल्यों में सार्थक अन्तर है। चूँकि माध्यमिक सहशिक्षा विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का सौन्दर्य मूल्य प्राप्तांक बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं के सौन्दर्य मूल्य प्राप्तांक से अधिक है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक सहशिक्षा संस्थाओं की शिक्षिकाएं बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं से सौन्दर्य मूल्य को अधिक महत्व देती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 5 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के आर्थिक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के आर्थिक मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के आर्थिक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 2.998 है जो विश्वास के 0.01 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.01 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 2.58 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 2.998 न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। चूँकि माध्यमिक सहशिक्षा विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का आर्थिक मूल्य प्राप्तांक बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं के मूल्य प्राप्तांक से कम है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक सहशिक्षा संस्थाओं की शिक्षिकाएं बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं से आर्थिक मूल्य को कम महत्व देती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 6 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के ज्ञानात्मक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के ज्ञानात्मक मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के ज्ञानात्मक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 5.440 है जो विश्वास के 0.01 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.01 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 2.58 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 5.440 न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के ज्ञानात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। चूँकि सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का ज्ञानात्मक मूल्य प्राप्तांक बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं के ज्ञानात्मक मूल्य प्राप्तांक से अधिक है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सहशिक्षा माध्यमिक संस्थाओं की शिक्षिकाएं बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं से ज्ञानात्मक मूल्य को अधिक महत्व देती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 7 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के सुखात्मक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के सुखात्मक मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के सुखात्मक मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 4.789 है जो विश्वास के 0.01 स्तर पर, 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.01 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 2.58 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 4.789 न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के सुखात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर है। चूँकि सहशिक्षा विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का सुखात्मक मूल्य प्राप्तांक बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं के मूल्य प्राप्तांक से अधिक है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाएं बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं से सुखात्मक मूल्य को अधिक महत्व देती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 8 में सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के शक्ति मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के शक्ति मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के शक्ति मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 2.673 है जो विश्वास के 0.01 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.01 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 2.58 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 2.673 न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के शक्ति मूल्यों में सार्थक अन्तर है। चूँकि सहशिक्षा विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का शक्ति मूल्य प्राप्तांक बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं के शक्ति

मूल्य प्राप्तांक से कम है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाएं बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं से शक्ति मूल्य को कम महत्व देती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 9 में सहशिक्षा शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के परिवार प्रतिष्ठा मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के परिवार प्रतिष्ठा मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के परिवार प्रतिष्ठा मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 2.863 है जो विश्वास के 0.01 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.01 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 2.58 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 2.863 न्यूनतम सार्थक टी–मान से अधिक है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के परिवार प्रतिष्ठा मूल्यों में सार्थक अन्तर है। चूँकि सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का परिवार प्रतिष्ठा मूल्य प्राप्तांक बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं के परिवार प्रतिष्ठा मूल्य प्राप्तांक से कम है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक सहशिक्षा संस्थाओं की शिक्षिकाएं बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं से परिवार प्रतिष्ठा मूल्य को कम महत्व देती है।

सारिणी 1 की क्रम संख्या 10 में माध्यमिक सहशिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षिकाओं के स्वास्थ्य मूल्य प्राप्तांकों की तुलना बालिका माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के स्वास्थ्य मूल्य प्राप्तांकों से की गई है। दोनों समूहों के स्वास्थ्य मूल्य प्राप्तांकों की तुलना से प्राप्त टी–मान 0.273 है जो विश्वास के 0.05 स्तर पर 148 स्वतंत्रांश के लिए सार्थक नहीं है, क्योंकि मानक टी–सारिणी के अनुसार 148 स्वतंत्रांश के लिए 0.05 स्तर पर न्यूनतम सार्थक टी–मान 1.96 होना चाहिए। प्राप्त टी–मान 0.273 न्यूनतम सार्थक टी–मान से कम है। अतः विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दोनों समूहों के स्वास्थ्य मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। यद्यपि सहशिक्षा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का स्वास्थ्य मूल्य प्राप्तांक बालिका माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं के स्वास्थ्य मूल्य प्राप्तांक से अधिक है, फिर भी इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता कि सहशिक्षा संस्थाओं की शिक्षिकाएं बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं से कम स्वास्थ्य मूल्य को अधिक महत्व देती है।

निष्कर्षः

सहशिक्षा के माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं का सामाजिक, लोकतांत्रिक, सौन्दर्य, ज्ञानात्मक मूल्य बालिका विद्यालयों की शिक्षिकाओं के उक्त मूल्यों से अधिक तथा परिवार प्रतिष्ठा, शक्ति, सुखात्मक आर्थिक मूल्य उनसे कम होता है। दोनों प्रकार के माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिकाओं के धार्मिक एवं स्वास्थ्य मूल्य समान होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. न्यू इन्टरनेशनल डिक्शनरी, वोल्यूम दो, ऐन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका आई.एन.सी., (विलियम बनटॉन पब्लिशर शिकागो, यू0एस0ए0, 1971) पृ0 1217
2. जी.टी., पेज एवं अन्य, इन्टरनेशनल डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन (निकोलस पब्लिशिंग कम्पनी, न्यूयार्क, 1977), पृ0 192
3. पी.सी. स्मिथ, एल.एम. कैन्डाल एन्ड सी.एल. हूलिन, द मेजरमेन्ट ऑफ सेटिसफैक्शन इन वर्क एवं रिटायरमेन्ट, (शिकागोः रेन्ड मोनाली एण्ड कम्पनी, 1969), पृ0 6
4. आर.एम. गुअन, ''इण्डस्ट्रीयल मोरालः द प्रॉब्लम ऑफ टरमीनोलोजी'', परसोनल साइकोलोजी, 11, 1958, पृ0 59–61
5. जे.एम. ब्राऊन एवं अन्य, अपलाइड साइकोलोजी, (न्यू दिल्ली, अमरिन्द पब्लिकेशन कम्पनी, 1972), पृ0 392
6. इबेहर्ट (1998), ''प्रिंसिपल प्रिंसिपल्स'' जनरल ऑफ एजुकेशन रिसर्च 84:4 पेज 189–190
7. सिंह, एच0एल, अध्यापकों के मूल्यों का मापन तथा उसका उनकी अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्ध का एक अध्ययन। डाक्टरोल, डिजर्टेशन, बी0एच0यू0, 1974

8. शर्मा शिखा (2008) ''शिक्षा महाविद्यालयों के प्रभावी तथा अप्रभावी शिक्षकों के वैयक्तिगत मूल्यों की तुलनाः एक अध्ययन'' अप्रकाशित एम0एड0 डिजर्टेशन, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
9. गुप्ता, प्रदीप कुमार (2009) ''संत कवियों के साहित्य में मूल्यों तथा गुरू–शिष्यों की भूमिकाओं का अध्ययन और वर्तमान में उसकी उपादेयता'' अप्रकाशित पीएच0डी0 शोध प्रबन्ध, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
10. शर्मा सुनीता (2007) ''माध्यमिक विद्यालयों के संस्थागत संगठनात्मक पर्यावरण के उच्च सामान्य एवं निम्न स्तर पर नवम् कक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के मूल्यों एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'', चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ अप्रकाशित पीएच0डी0 शोध प्रबन्ध।
11. शर्मा, शोभा (2011) ''कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय के संगठनात्मक पर्यावरण तथा उसमें अध्ययनरत छात्राओं के व्यक्तित्व, शैक्षिक सम्प्राप्ति और वैयक्तिक मूल्यों का एक अध्ययन'' अप्रकाशित पीएच0डी0 शोध प्रबन्ध, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
12. शर्मा शिखा (2008) ''शिक्षा महाविद्यालयों के प्रभावी तथा अप्रभावी शिक्षकों के वैयक्तिगत मूल्यों की तुलनाः एक अध्ययन'' अप्रकाशित एम0एड0 डिजर्टेशन, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।